Total Pages : 2 **Roll No. ----------**

MAJY-502

सिद्धान्त ज्योतिष एवं काल विवेचन–01

एम0ए0 ज्योतिष (MAJY-20)

प्रथम सेमेस्टर जून 2022

समयः 2 घण्टा **पूर्णांकः 80**

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो दो (02) खण्डों, क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड –क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बीस (20) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। [2 x 20 = 40]

प्र0–1 ग्रह को परिभाषित करते हुए ग्रहगति को प्रभावित करने वाले अवयवों का वर्णन कीजिए।

प्र0–2 मध्यम एवं स्फुट परिधि का सैद्धान्तिक विवेचन कीजिए।

P.T.O.

प्र0–3 ज्योतिष शास्त्र के अनुसार 'भूगोल स्वरूप' का उल्लेख कीजिए।

प्र0–4 काल को परिभाषित करते हुए 'मूर्त्त काल' का परिचय दीजिए।

प्र0–5 ग्रहकक्षा से क्या तात्पर्य है? विस्तारपूर्वक लिखिए।

खण्ड – ख

लघु उत्तरों वाले प्रश्न

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए दस (10) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। [4 x 10 = 40]

प्र0–1 वृहत्संहिता एवं सूर्यसिद्धान्त के अनुसार 'सिद्धान्त ज्योतिष' की व्याख्या कीजिए।

प्र0–2 राशि चक्र में कौन भ्रमण करता है? स्पष्ट करते हुए लिखिए।

प्र0–3 भगण का ज्योतिषीय अभिप्राय क्या है?

प्र0–4 आर्यभट्टीयम् के अनुसार ग्रहभगण का उल्लेख कीजिए।

प्र0–5 अमूर्त्त काल क्या है?

प्र0–6 ग्रहगति का साधन कैसे करते हैं?

प्र0–7 भूव्यास से क्या तात्पर्य है?

प्र0–8 सिद्धान्त ज्योतिष की उपयोगिता पर प्रकाश डालें।

———————————